भाषा

डॉ.पूजा (सा.आ.)
हिंदी विभाग
जे० के० पी०(पी.जी.)कॉलेज
मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

भाषा का अर्थ परिभाषा एवम् स्वरुप

- ‘भाषा’शब्द संस्कृत ‘ भाष्’ धातु से निस्पंन है जिसका अर्थ है ‘ भाष्’व्यक्तायां वाचि’ अर्थात वयक्त वाणी। ‘भाष्यते व्यिक्तवाग् रूपेण अभि वयज्यते इती भाषा’ अर्थात भाषा उसे कहते हैं जो व्यक्त वाणी के रूप में अभिव्यक्त की जाती है।
- भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने भाषा की परिभाषा निम्न ढंग से प्रस्तुत की है –
- **भारतीय विद्वानों के अनुसार-**
- **कामता प्रसाद गुरु के अनुसार भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भांति प्रकट कर सकता है और दूसरे के विचार स्वयं इस स्पष्ट कहा समझ सकता है**
- **बाबूराम सक्सेना के अनुसार जिन ध्वनि चिन्ह द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है उनको समझती रूप से भाषा कहते हैं**
- **भोले नाथ तिवारी के अनुसार भाषा निश्चित प्रियतम के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से नियंत्रित वह सार्थक ध्वनि समस्त है जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।**

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

- कराची के अनुसार भाषा उस स्पष्ट सीमित तथा संगठित ध्वनि को कहते हैं जो अभिव्यंजना के लिए नियुक्त की जाती है।
- हेनरी श्री के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्द द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।
- गार्डिनर के अनुसार विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्तियों स्पष्ट ध्वनि संकेतों का व्यवहार किया जाता है उन्हें भाषा कहते हैं।

वस्तु तथा भाषा की एक निश्चित सर्वमान्य एवं दोष रहित परिभाषा देना कठिन है अंततः कहा जा सकता है कि भाषा मानव मुख से उच्चारित स्पष्ट सार्थक एवं यादृच्छिक ध्वनियों कि वह क्रमबद्ध समझती है जो समाज सापेक्ष एवं विचार विनिमय का सहायक होती है ।

भाषा का स्वरूप

भाषा सापेक्ष होती है।

भाषा का एक व्यवस्थित रूप होता है।

वासा वाचिक ध्वनि संकेत है।

भाषा की प्रकृति एवं पर प्रवर्तिया

- भाषा अर्जित संपत्ति है।
- भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।
- भाषा परिवर्तनशील होती है।
- भाषा कठिनता से सरलता की ओर उन्मुख होती है।
- भाषा सतत प्रवाह मान सहज और नैसर्गिक होती है।
- प्रत्येक भाषा की संरचना प्रथक होती है।
- भाषा संयोग अवस्था से वियोग अवस्था की और प्रवाहमान होती है।
- भाषा की ऐतिहासिक सीमा होती है।
- भाषा में सामाजिक दृष्टि से स्तर भेद होता है।

भाषा के विविध रूप

- मातृभाषा – शिशु जब जन्म लेता है तो वह सर्वप्रथम अपनी माता की भाषा का अनुकरण करता है इस भाषा को ही मात्र भाषा कहते हैं।
- मूल भाषा – मूल भाषा से अभिप्राय उस प्रारंभिक भाषा से है जो किसी एक स्थान से उत्पन्न होकर कालांतर में विभिन्न स्थानों में अनेक भाषाओं के रूप में विकसित हुई है।
- बोली – बोली भाषा का वह रूप है जो मूलतः भूगोल पर आधारित एवं सीमित क्षेत्र में वह वर्क होता है।
- विभाषा – बोली एवं भाषा के बीच में होती है इसे उपभाषा भी कहते हैं।
- साहित्यिक भाषा – साहित्य की भाषा साहित्य भाषा कहलाती है।
- विशिष्ट भाषा – परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग जब वर्ग विशेष द्वारा किया जाता है तो उसे विशिष्ट भाषा कहते हैं।
- परिनिष्ठित भाषा –भाषा का वह इसलिए रुक जिसका व्यापक प्रयोग समाज के शिष्ट वर्ग द्वारा किया जाता है परिनिष्ठित भाषा है ।

- राष्ट्र भाषा – राष्ट्र की भाषा अथवा पूरे राष्ट्र की संपर्क भाषा
- राजभाषा – राजकीय कार्यों में प्रयोग होने वाली भाषा राजभाषा कहलाती है।
- निष्कर्ष – भाषा के विविध रूप अंतिम रूप नहीं है बल्कि भाषा के प्रमुख रुप है।
- वस्तुतः भाषा एक सामाजिक वस्तु है जो अनिवार्य एवं सर्व व्यापक होती है भाषा अनंत होती है और उसका रूप भी विविध होते हैं भाषा के विभिन्न रूपों का आधार इतिहास भूगोल प्रयोग इत्यादि पर आधारित होता है शैक्षिक राजनैतिक आर्थिक स्थितियों के कारण ही भाषा के अनेक रुप बनते हैं भाषा समाज की वह मूल्य धरोहर है जो समाज के लिए और समाज द्वारा निर्मित होती है।

धन्यवाद।